Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 05/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

Historical perspectives of clinical psychology

नैदानिक मनोविज्ञान आधुनिक युग में अपना विशेष महत्त्व रखता है। मनोविज्ञान की शाखा होने के नाते इस विज्ञान पर मनोविज्ञान का भी प्रभाव पड़ा है जिनमें संवेगात्मक समस्याओं से पीड़ित व्यक्तियों का अध्ययन तथा उपचार किया जाता है। शैफर तथा लजारस (Shaffer & Lasarus, 1952) ने नैदानिक मनोविज्ञान के ऐतिहासिक विकास की चर्च करते हुए कहा है कि जैविक विज्ञानों तथा दर्शनशास्त्र की घटनाओं, सामाजिक दबाव तथा राजनीतिक आन्दोलनों तथा दूसरी कई व्यक्तियों ने नैदानिक मनोविज्ञान के इतिहास की चर्चा को जटिल बना दिया है।
आज का नैदानिक मनोविज्ञान विशाल वृक्ष की तरह है जिसकी अनेक जड़े विभिन्न दिशाओं में फैली हुई है जिनमें शौक्षिक (Academic) क्षेत्र प्रमुख हैं। क्योंकि जब 1879 में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना की और प्रयोगात्मक परम्पराओं पर जोर दिया। उस समय के मनोवैज्ञानिकों ने चिकित्सा संबंधी समस्याओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के प्रति प्रत्यक्ष रूप से कोई रूचि तो नहीं दिखलायी परन्तु परोक्ष रूप से उनका प्रभाव निश्चित रूप से पड़ा है। बोरिंग (Boring) तथा हंट (Hunt) का मानना हैं कि उस समय प्रयोगात्मक कार्यविधियों पर मनोवैज्ञानिकों का ध्यान केन्द्रित था और प्रयोगात्मक वातावरण के प्रभाव से हटकर कुछ मनोवैज्ञानिक व्यावहारिक समस्याओं पर मनोविज्ञान के नियमों एवं सिद्धान्तों को लागू करने का प्रयास कर रहे थे। इन प्रयासों में असामान्य व्यवहारों तथा दूसरे व्यवहारिक मनोविज्ञानों का अध्ययन आरम्भ हुआ। अप्रत्यक्ष रूप से जेस्टाल्ट बाद तथा व्यवहार बाद ने भी इसके विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। बाटसन (Watson) के भय अनुकूलन (conditioning of fear) प्रत्यक्ष रूप से नैदानिक तथा असामान्य मनोविज्ञान से सम्बद्ध था और आधुनिक "व्यवहार चिकित्सा" (Behaviour Therapy) इसी पर आधारित है।

नैदानिक मनोविज्ञान के जन्मदाता (Founder of clinical psychology) के रूप में लाइटनर विटमर (Lightner Witmer) का नाम प्रसिद्ध है। जिन्होंने 1896 में APA (American Psychological Association) की वार्षिक बैठक में "मनोविज्ञान में चिकित्सा विधि तथ पढ़ाने नैदानिक विधि" (The clinical method in-Psychology and the Diagnostic method of teaching) पर एक लेख प्रस्तुत किया। यह लेख एक रोगी के बच्चे की समस्या पर आधारित था जिसका अध्ययन विटमर ने पेन्सिलवेनिया में अपनी प्रयोगशाला में किया। विटमर के इस रोगी के अध्ययन के साथ मार्च 1896 में मनोवैज्ञानिक उपचार गृह की स्थापना हुई। अपने इस उपचार गृह में विटमर ने बच्चों की मासिक समस्याओं का अध्ययन करने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological texts), व्यक्ति इतिहास लेखा (case history), निरीक्षण (observation) तथा साक्षात्कार (Interview) विधियों का सहारा लिया जिनका उद्देश्य बच्चों के मानसिक विघटन के वास्तविक कारणों को जानना तथा उनका उपचार करना था।

इस ऐतिहासिक मनोवैज्ञानिक उपचार गृह (Psychological clinic) के साथ औपचारिक ढंग से नैदानिक मनोविज्ञान का आरम्भ हुआ और विटमर ने इसका नाम "नैदानिक मनोविज्ञान" (Clinical Pshychology) रखा। 1907 में विटमर नेमनोवैज्ञानिक उपचार गृह (The Psychological clinic) नामक पत्रिका का प्रकाशन किया, स्वयं उसका संपादन किया और लेख लिखे। विटमर के चिकित्सा संबंधी कार्यों में स्पष्ट रूप से बच्चों को प्रधानता दी गयी जिसमें मानसिक दुर्बलता (Mental Deficiency), मनोविकृति (Psychosis), बौद्धिक अवसामान्यता (Intelemental subnormality) तथ भाषा संबंधी समस्या आदि का अध्ययन किया जाता था। इस तरह विटमर ने नैदानिक मनोविज्ञान के संस्थापक के रूप में इसके विकास को बहुत अधि क प्रभावित किया। उनके अतिरिक्त और भी अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपने योगदान से मनोविज्ञान की इस शाखा के विकास को आगे बढ़ाया। क्रोडिन (Krohin) पहला व्यक्ति था जिसने सर्वप्रथम किसी मानसिक अस्पताल में नैदानिक मनोवैज्ञानिक के रूप में अपनी सेवाएँ दी। मैकमिलन के निर्देशन में मानसिक तथा ऐसी मनोवैज्ञानिक शक्तियों का मापन संबंधी कार्य किया जिसने नैदानिक मनोविज्ञान के विकास को प्रभावित किया। शोडार्ड के निर्देशन में न केवल उपचार गृह के कार्यक्षेत्रों में फैलाव हुआ बल्कि चिकित्सा विधियों एवं परीक्षणों का विकास भी हुआ जिसने नैदानिक मनोविज्ञान के विकास को प्रभावित किया। 1909 में वीयर्स (Bears) ने नेसनल कमिटी फॉर मेंटल हाइजिन (National committee for mental Hygine) की स्थापना की जिसके अधीन बहुत सारे उपचार गृह खोले गये। वैलीन (Wallin) उस समय के एक सक्रिय नैदानिक मनोवैज्ञानिक थे। 1910 में उनको राष्ट्रीय मानसिक संघ (National Mental Association) की चिकित्सा संबंधी प्रयोगशाला का निर्देशन बना दिया गया। वैलीन ने 1917 में पिट्सवर्ग (Pittsberg) विश्वविद्यालय में एक सक्रिय उपचार गृह की स्थापना की। Wallin के अनुसार 1916 में सम्पूर्ण अमेरिका में लगभग उन्नीस उपचार गृह कार्य कर रहे थे। यही संख्या 1936 में बढ़कर 676 हो गयी जिनमें इन उपचारगृहों के निर्देशक मनोवैज्ञानिक थे। लैटिट (Louttit) ने 1993 में लगभग ।।। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों से प्रश्नावली के द्वारा सूचनाएँ प्राप्त करके बतलाया कि नैदानिक मनोवैज्ञानिक मुख्य रूप से मानसिक मापन, शैक्षिक निर्देश, व्यावसायिक निर्देश, नैदानिक साक्षात्कार, शिक्षण सुधार, मनोचिकित्सा, सामाजिक अनुसंधान तथा प्रशासनिक कार्य कर रहे थे। इन कार्यों में सबसे महत्वपूर्ण मानसिक मापन का कार्य था।

धीरे-धीरे उपचार गृह के कार्य क्षेत्र में फैलान आने लगा। अब प्रौढ़ व्यक्तियों के समायोजन की समस्याओं पर भी ध्यान दिया जाने लगा। अब उपचार गृहों में मनोवैज्ञानिकों का कार्य के मानसिक मापन तक सीमित नहीं था। अब वे व्यक्तित्व के दूसरे गुणों के मापन, निदान, मनोचिकित्सा तथा शोध कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे। दूसरे विश्वयुद्ध के समय तथा इसके बाद भी मनोवैज्ञानिक सेवाओं पर बहुत अधिक जोर दिया जाने लगा। युद्ध के बीच अनेक सैनिक अपना मानसिक संतुलन खो बैठे थे और उनमें समायोजन तथा मानसिक बीमारी की समस्याएँ उत्पन्न हो गयी थी। मानसिक स्वास्थ्य को मापने तथा मानसिक बिमारी से पीड़ित सैनिकों के लिए मनोवैज्ञानिकों की सेवा की आवश्यकता महशुस की गयी। मानसिक चिकित्सा अब नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का महत्त्वपूर्ण कार्य समझा जाने लगा। नैदानिक मनोवैज्ञानिक अब स्वतंत्र व्यवसायिक मनोवैज्ञानिक के रूप में कार्य करने की कोशिश करने लगे।

दूसरे विश्वयुद्ध तक नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का कोई स्वतंत्र संगठन नहीं था। वे लोग अमरीकी व्यावहारिक मनोवैज्ञानिक संगठन के सदस्य के रूप में नैदानिक मनेविज्ञान को एक विज्ञान तथा व्यवसाय के रूप में सम्मानजनक स्थान दिलाने की कोशिश में थे। 1945 में अमरीकी मनोवैज्ञानिक संगठन ने नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को मान्यता प्रदान की और अब उनके संगठन के सदस्य के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। अमरीकी मनोवैज्ञानिक संगठन ने 1947 में शैको (Shakow) की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया जिसका उद्देश्य नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के प्रशिक्षण के संबंध में सुझाव देना था।